तैयार करे और लोगों के बीच लेकर जाय। देश में बहुत बड़ा बाजार है। वह देश के बुद्धिमान नौजवान का इंतजार कर रहा है। कभी विवेकानंद जी को किसी ने पढ़ा है। उनकी विदेश नीति ज़्या थी। स्वामी विवेकानंद जी ने उस समय One Asia कहा था। आज 125 साल के बाद दुनिया में वह सामने नजर आ रहा है। 125 साल पहले जिस महापुरूष ने ये दर्शन किया था। उन्होंने कहा था कि जब संकट से घिरा होगा, तब One Asia ही रास्ता दिखाने का काम करेगा।

सन 2022 भारत की आजादी के 75 साल हो जाएंगे। ज़्या इसके लिए हम कोई संकल्प ले सकते हैं। बदलाव आने में देरी नहीं लगती। देश के 125 करोड़ लोग एक कदम चलेंगे तो हम 125 करोड़ कदम आगे होंगे। स्वामी विवेकानंद कूपमंडूप पर एक कथा सुनाया करते थे। वह कुंए के मेढक की बात करते थे। हमारे भीतर इतना सामर्थ्य होना चाहिए कि बाहर की चीजों से हमें कोई परेशान नहीं हो। मैं दुनिया में जहां जाता हूं, महसूस करता हूं कि विश्व का भारत के प्रति नजरिया बदल चुका है। यह सब राजनीतिक शज़्ति से नहीं हुआ, बल्कि जनशज़्ति से संभव हो पाया है। हमें अपने अंदर की बुराइओं के खिलाफ लड़ना है। आधुनिक भारत का जो सपना देखा गया है, उसे पूरा करने का प्रण लेना होगा। एक बार मैं एक महापुरूष से मिला। उन्होंने बहुत अच्छी बात कही। उन्होंने कहा कि भारत में लोग हजार साल पहले ज़्या था कि बात करते हैं जबकि विश्व आज आप कहां पर हो, उस पर मूल्यांकन करता है। यह सही है कि हम भाग्यवान हैं कि हमारे पास एक महान विरासत है। लेकिन हमारा दुर्भाग्य है कि हम उसी के गौरवगान से आगे बढ़ने को तैयार नहीं हैं। गौरवगान आगे बढ़ने की प्रेरणा के लिए होना चाहिए, गौरवगान पीछे हट करके रहने के लिए नहीं होना चाहिए।